

नीलकुरजी संकटग्रस्त प्रजाति घोषित

स्रोत: द हट्टि

नीलकुरजी (स्ट्रोबिलांथस कुंथयाना) प्रत्येक 12 वर्ष में एक बार खिलता है, इसे **IUCN रेड लसिट** में संवेदनशील (मानदंड A2c) के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

- इस प्रजाति का इसके अद्वितीय पुष्पन चक्र और पारस्थितिकी चुनौतियों के कारण पहले IUCN मानकों के अंतर्गत मूल्यांकन नहीं किया गया था।
- नीलकुरजी तीन मीटर ऊँची एक **स्थानिक झाड़ी है, जो केवल दक्षिण-पश्चिम भारत** के पाँच पर्वतीय परदृश्यों के उच्च ऊँचाई वाले **शोला ग्रासलैंड इकोसिस्टम (Shola Grassland Ecosystems)** में **1,340-2,600 मीटर की ऊँचाई** पर देखी जाती है।
 - नीलकुरजी का वैज्ञानिक नाम **केरल के साइलेंट वैली नेशनल पार्क (Silent Valley National Park)** में स्थित कुंती नदी (Kunthi River) के नाम पर रखा गया है, जहाँ यह फूल बहुतायत में पाया जाता है।
 - वे सेमलपेरस (जीवनकाल में केवल एक बार प्रजनन करने वाले) होते हैं, तथा **जीवन चक्र के अंत में प्रत्येक 12 वर्ष में एक साथ खिलते और फलते** हैं।
 - अधिक मात्रा में खिलने के लिये प्रसिद्ध, ये फूल पहाड़ी घास के मैदानों को **बैंगनी-नीला रंग** प्रदान करते हैं, जसि कारण इन्हें **नीलकुरजी (बलू स्ट्रोबिलांथस) फूल के नाम से जाना जाता है।**
 - दक्षिण-पश्चिम भारत की उच्च ऊँचाई वाली पर्वत शृंखलाओं (High-Altitude Mountain Ranges) के 14 पारस्थितिक क्षेत्रों में इस प्रजाति की 34 उप-प्रजातियाँ का आवास है, इनमें से 33 उप-प्रजातियाँ **पश्चिमी घाट** में और एक **पूर्वी घाट** (येरकोड, शेवरॉय हलिस) में पाई जाती हैं।
 - इस प्रजाति की अधिकांश उप-प्रजातियाँ तमलिनाडु के **नीलगरि** में हैं, इसके बाद मुन्नार, पलानी-कोडाईकनाल और अन्नामलाई पर्वत में हैं।
- **प्रमुख संकट:** प्रमुख संकटों में चाय और सॉफ्टवुड बागानों से आवास का नुकसान, शहरीकरण, आक्रामक प्रजातियाँ और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। इसके लगभग **40% आवास नष्ट हो चुके हैं।**



और पढ़ें: [नीलकुरजी फूलों की नई कसिम](#)

